भजन

तर्ज–दिल के अरमां आसुंओं

हम कहां के थे कहां पर आ गये
गुलशने फरामोशी में भरमा गये

1–कुफर की दुनिया के काबिल थे न हम
खेल होगा धाम में धोखा खा गये

2–इश्क हक की जात से हुए बेखबर
चाहे मजबूरी से हम घबरा गये

3–तुम न आते तो कहीं के ना थे हम
जान कर निसबत हमें जगा रहे

4–आपसे हमको शिकायत कुछ नही
अपने आमालो से खुद शरमा गये

5–पिया की वाणी से सुंकू मिलने लगा
देने वाले के करिश्मे छा गये

6–जाम की मस्ती ने खैचां इस कदर
बिन चले खुद को यहां पर पा गये